

into the Government service, at least, to thirty-two years. Though it will not solve the whole problem, it will give the desired solace to the agitated youth. Thank you, Sir.

Need to demarcate the line of prosperity like the line of poverty in the country

श्री श्याम लाल (उत्तर प्रदेश) : धन्यवाद महोदय, यह तथ्य सर्वविदित है कि जब हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ, उस समय देश की जनता रोटी, कपड़े तथा समुचित शिक्षा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से गरीब थी किन्तु हमारा राष्ट्र गरीब नहीं था। प्रमाण स्वल्प वर्ष 1950-51 में जब हमारे देश की जनसंख्या 36 करोड़ हुई तब भी हमारे राष्ट्र पर मात्र 33 करोड़ रुपये का विदेशी कर्ज रहा और प्रति व्यक्ति औसतन मात्र 87 पैसे ही रहा किन्तु आज प्रति व्यक्ति 6000 रुपये से ज्यादा विदेशी कर्ज हमारे ऊपर है। आज हम सभी क्षेत्रों, यहां तक कि सुरक्षा के क्षेत्र में भी पूर्णतः आत्मनिर्भर हैं किन्तु इन सबके होते हुए भी हम इस तथ्य को स्वीकार करेंगे कि एक तरफ गरीबी के कारण लोग भुखमरी के शिकार हो रहे हैं और ऐसे लोगों के नौनिहाल बच्चे कागज व प्लास्टिक के टुकड़े गली-कूचे से चुनकर अपने आधे पेट की भूख के साथ सोते हैं तो दूसरी तरफ पांच सितारा होटलों में एक गिलास पानी की कीमत 102 रुपये की दर से वसूल की जा रही है।

महोदय, राष्ट्र के निर्माण में लगे बहुसंख्यक किसान, मजदूर, कर्मचारी व छोटे-छोटे व्यवसायी आज भी गरीबी व भुखमरी के झंझावात से ग्रसित हैं और दूसरी तरफ हमारे राष्ट्र के कुछ लोग ऐसे हैं जिनका असीमित धन विदेशों में जमा है। आज हमारे देश पर भारी विदेशी कर्ज का बोझ है जो हमारी आर्थिक गुलामी का प्रतीक है। महोदय, जिस तरह से गरीबी रेखा का सीमांकन करके हमारे देश में गरीबी उन्मूलन करने का प्रयास किया जा रहा है, वह उसी तरह से सिद्ध हो रहा है जैसे जिसकी जितनी दवा की जा रही हो, रोग उतना ही बढ़ रहा हो।

अतः मैं भारत सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि जब राष्ट्र के कुछ लोग अपनी असीमित अमीरी के कारण राष्ट्र को गरीब बनाने के दुष्प्रक्र में लगे हों तो निश्चित रूप से राष्ट्रवासियों और राष्ट्र को गरीबी से मुक्ति दिलाने हेतु एक निर्धारित अमीरी रेखा का भी सीमांकन किया जाए। धन्यवाद।

श्री गांधी आज़ाद (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं श्री श्याम लाल जी से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

MR. CHAIRMAN: Shri K. C. Kondaiah, not present. Shri K. Rama Mohana Rao.

Rise in the crime rate against women

SHRI K. RAMA MOHANA RAO (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, during the earlier days, the Indian woman was treated as "Griha Lakshmi", and now, if I say the same thing, people will laugh at me, because, there has been a sharp increase in the crime against women. My view is substantiated by the recent report of the NCRB, according to which,